''वर्तमान शिक्षा पद्धति - विवेचना एवम् सुझाव''

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही एक समन्वित राष्ट्रीय शिक्षा नीति विकसित करने हेतु प्रयास चालू है. यह एक दुर्भाग्य की बात है कि भारतीय शिक्षाविद् तथा शासन द्वारा अभी तक कोई ऐसी शिक्षा नीति एवम् तदनुकूल शिक्षा प्रणाली विकसित करने में असफल रहा है जिससे मानवीय तथा राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति हो सके.

भारतीय नागरिक के नाते, इस विषय में, सभी बुद्धि जीवियों का चिंतित होना स्वभाविक है. फलतः शिक्षा - ~~xx~~ नीति एवम् प्रणाली के लिए जो आधारभूत तथ्य है उनका मनन आवश्यक है.

शिक्षा नीति एवम् प्रणाली में जो सुधार की चाह तथा मांग है उसके मूल में दो कारण निरीक्षण, परीक्षण सर्वेक्षण तथा अध्ययन से परिलक्षित होता है:-

प्रथम - शिक्षा नीति एवम् प्रणाली की अपूर्णता , तथा
द्वितीय- शिक्षा नीति एवम् प्रणाली से वांछित आकांक्षाओं की पूर्ति न होना.

शिक्षा की अपूर्णता इसलिए सिद्ध होती है कि शिक्षित व्यक्तियों के व्यक्तित्व में जिन मूल्यों की अपेक्षा भारतीय समाज ने किया उसकी उपलब्धि नहीं हुई या कम हुई. फलतः ही वर्तमान शिक्षा से असन्तोष है. जितने भी विषयों का अध्ययन किया जा रहा है उन सब की उपादेयता का मूल्यांकन शिक्षित व्यक्ति के जीवन से ही किया जाता है. इस सदर्भ में यह विचारणीय है कि :-

१- शिक्षित मनुष्यों से क्या अपेक्षा है ?
२- शिक्षित मनुष्यों से अपेक्षा रखता कौन है ? तथा
३- शिक्षित मनुष्यों से अपेक्षा क्यों की जाती है.

अब हम उपरोक्त तीन बिन्दुओं पर एक एक कर विचार करेंगे -

१- शिक्षित मनुष्य से क्या अपेक्षा है -

मात्र सह अस्तित्व की ही अपेक्षा शिक्षित मनुष्य से की जाती है. पर इसके विपरीत यह देखने में आ रहा है कि शिक्षित मनुष्यों में सह अस्तित्व की भावना दिनों दिन ~~बढ़ती~~ कम होती जा रही है.

-(२)-

सह-अस्तित्व ही सामाजिकता का प्रत्यक्ष एवम् सिद्ध स्वरूप है. इसके लिए अपराध एवम् गलती जो विवशता तथा रहस्यता के रूप में है, विरोधी क्रिया है. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसके कारण उस पर कुछ दायित्व है. सफलता का वहन उत्पादन, उपभोग तथा वितरण पर आधारित है. दायित्व का सफलता पूर्वक वहन अधिक उत्पादन, कम उपभोग तथा प्रेम के वितरण से है. दायित्व के वहन करने में असमर्थता का मूल कारण कम उत्पादन तथा अधिक उपभोग है तथा यही अपराध और गलती का मूल कारण है.

अपराध एवम् गलती के परिहार के लिए मानवीय गुणों का अध्ययन तथा मूल्यांकन आवश्यक है. मानवीय गुणों का मूल्यांकन समाज सेवा से ही अथवा समाज के लिए मनुष्य की उपयोगिता से ही किया जाता है. समाज सेवा व्यक्तित्व तथा प्रतिभा से ही सम्भव है.

प्रतिभा मनुष्य में विज्ञान एवम् विवेक के रूप में ही परिलक्षित होती है तथा मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्धारण उसके आहार, विहार तथा व्यवहार से होता है ।

2- शिक्षित मनुष्यों से अपेक्षा रखता कौन है :-

समाज, शिक्षित मनुष्य से दायित्व वहन की अपेक्षा करता है, जिसके लिए वह शिक्षित मनुष्य का मूल्यांकन करता है समाज में परम्परता सिद्ध है तथा हर परम्परता, आशा एवम् प्रत्याशा में व्यंजित तथा प्रयोजित है. इसी के अनुसंगिक मूल्यांकन स्व और पर भेद से होता है. प्रत्येक मनुष्य के प्रति दूसरे का मूल्यांकन करने वाले व्यक्ति में ज्ञान, स्नेह तथा सरलता का होना आवश्यक है अन्यथा गलत मूल्यांकन होगा. अज्ञान, द्वेष तथा अभिमान से व्यक्ति कभी सही मूल्यांकन नही कर सकता.

मानव में परस्पर तथा सम्पर्क है ही तथा इसी परम्परता को स्वीकार अथवा अस्वीकार ~~करने~~ के लिए वह मूल्यांकन करता है. यह स्वीकार अथवा अस्वीकार अपेक्षाकृत रीति से मूल्यांकन के पश्चात् स्वयम् को अथवा अन्य को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए तथा स्व,पर की उपादेयता को सिद्ध करने के लिए है.

मनुष्य परम्परता के सम्पर्क एवम् सम्बन्ध को दायित्व पूर्वक स्वीकारता है अन्यथा ~~न~~ अस्वीकारता है. उपयोगिता के आधार ~~स्व-पर~~ श्रेष्ठता का निर्णय विकास के लिए सहायक अन्यथा ~~तथा~~ आधारहीन समर्थन वादविवाद का कारण है. ~~सामाजिकता~~

(3) शिक्षित मनुष्य से ~~अपेक्षा क्यों~~ रखी जाती है ?
सामाजिकता की निर्वाह के लिये ~~सह-अस्तित्व~~
सह-अस्तित्व की अपरिहार्य अपेक्षा मनुष्यों से की जाती है।

मनुष्यों से की जाती है जिससे उससे अविकसित व्यक्ति भी प्रेरणा ले सके.

उपरोक्त वर्णित अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु समुचित शिक्षानीति एवम् तदनुकूल शिक्षा प्रणाली का विकास आवश्यक है. शिक्षा में आमूल परिवर्तन की चर्चा विगत तीस वर्षों से सुनने में आ रही है परन्तु इस समूची चर्चा के दौरान शिक्षाविदों तथा शासन के विचारों के अवलोकन से यह स्पष्ट झांकी नहीं उभरी कि हमारी राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षण द्वारा किस प्रकार के व्यक्तित्व का निर्माण करना है. मानव का मानव समाज के साथ, समस्त सम्पर्कों व तथा सम्बन्धों के निर्वाह के लिए - जिससे सामाजिकता की स्थापना हो सके तथा इसकी अक्षुण्णता बनी रहे - मौलिक कर्तव्यों और दायित्वों के अवलोकन से यह पाया जाता है कि एक ऐसी शिक्षा नीति (जिससे राष्ट्रीय आकांक्षाओं) का प्रादुर्भाव की पूर्ति हो सके तथा इसके प्रति प्रत्येक मनमस्तिष्क में निष्ठा जागृत हो सके.

एक सुशिक्षित मनुष्य के स्वभाव में धीरता, वीरता तथा उदारता, आचरण में न्याय, धर्म तथा सत्य, इच्छा में पुत्रेषणा, वित्तेषणा तथा लोकेषणा कुशलता तथा निष्ठापूर्वक प्रस्थापित होनी चाहिए.

वर्णित अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु तथा मानवीयतापूर्ण स्वभाव - धीरता, वीरता तथा उदारता; मानवीयतापूर्ण दृष्टि न्याय, धर्म तथा सत्य, मानवीयतापूर्ण विषयों - पुत्रेषणा, वित्तेषणा, तथा लोकेषणा को बोधगम्य एवम् चरितार्थ करने के लिए शिक्षा नीति में निम्नानुसार सुधार की आवश्यकता है जिससे मनुष्य में क्षमता, योग्यता तथा पात्रता का समुचित विकास होगा तथा वह सामाजिक कर्तव्यों का पालन तथा दायित्वों का वहन करने में समर्थ हो सकेगा.

इसके लिए :-

1- विज्ञान शास्त्र के साथ चैतन्य पक्ष,
2- मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष,
3- अर्थ-शास्त्र के साथ प्राकृतिक एवम् वैकृतिक ऐश्वर्य के सदुपयोगात्मक एवम् सुरक्षात्मक नीति पक्ष,
4- समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति तथा सभ्यता,
5- राजनीतिक शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा सम्वर्धनात्मक नीति पक्ष,
6- दर्शन शास्त्र के साथ क्रिया पक्ष,
7- इतिहास एवम् भूगोल के साथ मानव तथा मानवीयता का,
तथा 8- साहित्य के साथ तात्विक पक्ष,

का अध्ययन निर्भ्रमता के लिए आवश्यक है.

निम्नानुसार है :-

-(4)-

1- विज्ञान शास्त्र के साथ चैतन्य पक्ष का अध्ययन :-

चैतन्य पक्ष का तात्पर्य मूलतः विचार, इच्छा एवम् संकल्प से है जो मनुष्य का मूल स्वरूप है. चैतन्य पक्ष के अभाव में शरीर से सम्पन्न होने वाली कोई क्रिया सिद्ध नहीं होती है.

विज्ञान के द्वारा मनुष्य ने अपने से कम विकसित का अध्ययन किया है, जिसे विकास समझा गया है. यथार्थ में विज्ञान द्वारा अविकसित को अधिकाधिक उपयोगिता के संदर्भ में ही निरीक्षण, परीक्षण तथा सर्वेक्षण का आधारभूत कार्य सम्पन्न हुआ है. यह समस्त अध्ययन इससे अर्थात् ~~कार्य सम्पन्न हुआ है~~ जड़ पक्ष से विकसित विचार पक्ष द्वारा ही किया गया है. इसीलिए, सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से प्राप्त उपलब्धियां मनुष्य के उपभोग तथा उपयोग पक्ष में सहायक सिद्ध हुई है न कि विकास में. मनुष्य के विकास का मापदण्ड व्यावहारिकता में सह-अस्तित्व, व्यवहार के मूर्त रूपात्मक विचार पक्ष में मानवीयता मापदण्ड है. मानवीयता का तात्पर्य उपरिलिखित अनुसार धीरता, वीरता तथा उदारतापूर्ण स्वभाव, न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्यात्मक दृष्टि और पुत्रेषणा वित्तेषणा तथा लोकेषणात्मक विषय सीमा का अनुशासन ही है.

उपरोक्त मानवीयता पूर्ण स्वभाव, दृष्टि तथा विषय का विधिवत ज्ञान वैज्ञानिकों को न होने के कारण ही उनके द्वारा मानवियता के विनाश के लिए शस्त्रास्त्रों तथा अणु-अणुओं का निर्माण किया जा रहा है.

2- मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का अध्ययन :-

वंशानुसांगिक वासना क्रम पद्धति से किया गया मनोविज्ञान का अध्ययन एक अरसे से होते हुए भी मानवीयता का अध्ययन एवम् इसकी स्थापना कराने में मनोविज्ञान शास्त्र असमर्थ सिद्ध हुआ है ।

हम यह चर्चा कर चुके है कि मनुष्य नाम की इकाई में चैतन्य पक्ष अधिक तथा भौतिक पक्ष कम है. कामोत्तेजना और प्रजनन का सीधा संबंध है तथा शरीर रचना में वंशानुसांगिकता का चैतन्य पक्ष से कोई सम्बन्ध नहीं है. मनोविज्ञान मनुष्य के वैचारिक पक्ष की विवेचना का विषय है तथा शारिरीक रचना से मानसिकता का बहुत

नगण्य सम्बन्ध है. शरीर विचाराधीन कार्यरत रहता है अतः जहाँ तक मानसिकता का प्रश्न है मनोविज्ञान शास्त्र में वंशानुसंगिकता का प्रश्न है मनोविज्ञान शास्त्र में वंशअनुसंगिकता तथा काम प्रसंगों को अत्यधिक महत्व देने में अति व्याप्ति दोष उत्पन्न होता है. यही कारण है कि उक्त आधार पर निर्मित मनोविज्ञानिक नियमों के आधार पर आज के तथा-कथित विकसित समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना नहीं हो पाई है.

आज का उन्नत मनोविज्ञान शास्त्र समस्त मानव व्यवहार के मूल में काम-प्रसंग की ही महत्ता प्रतिपादित करता है. सृष्टि के प्राथमिक जीव इकाईयों में भी [illegible] कामुकता तथा यौन क्रियाएं परिलक्षित होती है. यौन क्रियाओं का प्रजनन ही इसका अंतिम लक्ष्य भी है. जबकि सृष्टि के प्राथमिक जीव इकाईयों में भी यौन क्रिया पाई जाती है तो मानव में जो सृष्टि की सबसे विकसित इकाई है किस प्रकार यौन क्रियाएँ तथा यौन इच्छाएं ही समस्त क्रिया कलापों का आधार माना जा सकता है. यौन क्रियाएं मात्र अविवेक है. मानव का मूल विचार ही है तथा मानव के मूलरूप विचार पत्र का अध्ययन, प्रयोग एवम् अभ्यास ही मानवीयता को अर्जित गुण में परिवर्तन करने की प्रक्रिया है. विचार पक्ष के ह्रास एवम् विकास के लिए जो कारण है उसे संस्कार की संज्ञा से इंगित कराया गया है.

3- अर्थ शास्त्र के साथ प्राकृतिक एंव वैकृतिक ऐश्वर्य के सदुपयोगात्मक तथा सुरक्षात्मक नीति पक्ष का अध्ययन :-

यह इसलिए आवश्यक है कि अर्थ- शास्त्र में मूलतः ऐश्वर्यों - प्राकृतिक एंव वैकृतिक सम्पदा- के उत्पादन उपयोग, उपभोग तथा वितरण का ही अध्ययन है - जो विशेषतः मुद्रा पर आधारित है, जबकि मूल पूंजी श्रम एवम् निपुणता है जिसके नियोजन के फलस्वरूप ही वस्तु व सेवा प्राप्त होती है, जो वास्तविक उपलब्धि है तथा जिसकी उपयोगिता भी है,

प्राकृतिक एवम् वैकृतिक ऐश्वर्य के अभाव में श्रम एवम् निपुणता होते हुए भी वस्तु एवं सेवा की प्राप्ति नहीं है तथा पूरे अर्थ शास्त्र का आधार वस्तु - प्राकृतिक एंवम् वैकृतिक है अतः प्राकृतिक अर्थ को सुरक्षित रखते हुए तथा उसके उत्पादन में कोई व्यवधान उपस्थित न हो ऐसी जानकारी के साथ साथ उसके सदुपयोग के ज्ञान हेतु निश्चित रीति व नीति से सहृदय बनना है इसलिए आवश्यक है कि जो जिसका अपव्यय करेगा वह उससे वंचित रह जायगा.

-(6)-

वस्तु व सेवा की अनिवार्यता तथा सदुपयोग के ज्ञान के बिना इनका मूल्य निर्धारण सही सही नहीं हो सकेगा, साथ ही सही वितरण व्यवस्था या वितरण प्रणाली का विकास भी नहीं किया जा सकेगा ।

४) समाजशास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति तथा सभ्यता का अध्ययन -

विश्व में जितनी भी संस्कृतियाँ तथा सभ्यतायें आज तक उभरी हैं उनके सम्यक अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विभिन्न देश तथा काल में जो संस्कृतियाँ एवम् सभ्यता उभरी उनके मूल में एक ही भावना थी और वह थी मानवीयता की ।

मानवीयता की स्थापना के लिए ही समाज- शास्त्र का अध्ययन है, आज समाज - शास्त्र के अधीन मात्र विभिन्न परम्पराओं तथा समाज या संस्कृतियों के विषय में अध्ययन तो करवाया जाता है पर सामाजिकता क्या है, जो समाज शास्त्र का लक्ष्य है , नहीं पढ़ाया जाता ।

समाजशास्त्र का अध्ययन वर्तमान में मानवीयता के के संदर्भ में कराना चाहिए । मानवीय संस्कृति तथा सभ्यता का लक्ष्य निश्चित एवम् निर्धारित है । इस संदर्भ में अध्ययन के पश्चात् ही समाज शास्त्री वर्तमान समाज की कमियों का विश्लेषण करते हुए उनके निराकरण के लिये योजना प्रस्तुत कर सकता है ।

५) राजनीतिक शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षण एवम् सम्वर्धन की नीति पक्ष का अध्ययन :--

राज्यनीति के विकास के मूल में एक ऐसी व्यवस्था को जन्म देने की भावना निहित है जिस व्यवस्था में समस्त भय से मुक्त हो तथा उसे भौतिक समृद्धि तथा बौद्धिक समाधान का समान अवसर प्राप्त हो सके ।

सही राज्य नीति के लिए निर्धारण के लिए यह आवश्यक है कि पहले यह निश्चित किया जाय कि ऐसी व्यवस्था

ऐसी होनी चाहिए जिससे मानवीयता का संरक्षण एवम् सम्वर्धन सम्भव है, ऐसा मात्र सह - अस्तित्व में निष्ठा प्रतिष्ठित करने से ही सम्भव है। समाज के गठन के मूल उद्देश्य को ध्यान में रख कर राजनीतिक शास्त्र का अध्ययन होना चाहिये। समाज की प्राथमिक इकाई व्यक्ति है। मानवीयतापूर्ण सामाजिक संगठन में ही व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए अधिकतम अवसर तथा साधन उपलब्ध होने की सम्भावना है।

अतः राजनीतिक शास्त्र की पूर्णता तथा अपूर्णता का अध्ययन एवम् अध्यापन मानवीयतापूर्ण समाज के संरक्षण एवम् संवर्धित संगठन की क्षमता से आंकी जानी चाहिए।

६) <u>दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का अध्ययन</u> :-

वर्तमान समस्त दर्शन शास्त्रों के मनन के पश्चात् जो विशिष्टतायें या जिन अलौकिक अनुभूतियों की या जिनके सान्निध्य की सम्भावना दृष्टिगोचर होती है तथा उन विशिष्टताओं को पाने की, उनके अतिरिक्त जो कुछ भी है उससे मुक्त होने की, उनको पाने की, यही ही पाने की जो विचार पद्धति प्राप्त होती है, उस विचार पद्धति में निहित सफल नियमों एवम् प्रक्रियाओं को उद्घाटित करना ही क्रिया पक्ष का अध्ययन है।

सामान्य व्यवहार में दायित्व व कर्तव्य के पालन की पूर्ति भी साथ साथ करते हुए, इस अध्ययन को सम्पन्न करना ही क्रिया पक्ष तथा विचार पक्ष की एक - सूत्रता सिद्ध करना है। यही इस अध्ययन की सफलता है। इस एक सूत्रता से ही सफलता एवम् समृद्धि हेतु व्यापकता की अपेक्षा में दिव्य मानव का अध्ययन, दिव्य मानव की अपेक्षा में मानवता का अध्ययन, मानवीयता की अपेक्षा में अमानवीयता का अध्ययन, अमानवीयता की अपेक्षा में जीवों का अध्ययन, जीवों की अपेक्षा में प्राणियों का अध्ययन, प्राणियों की अपेक्षा में पदार्थों का अध्ययन और पदार्थों की अपेक्षा में परमाणुओं का अध्ययन तथा परमाणुओं की शून्य या व्यापकता में अवस्थिति का अध्ययन - व्यवहारिकता तथा वैचारिकता में

-- -